

私奔
皇后

紅拂集

廣益書局刊行



李靖
紅拂



徐道士
孔驢



隋煬帝
楊素



李世民
劉文靜



紅拂集自序

世傳虬髯客傳。或稱張說。或題杜光庭。大抵皆屬僞託。莫詳出誰手。宋范公偁過庭錄所載黃鬚翁傳。似差可信。惟云於汴州見太宗。殊紕謬。文亦不似唐人。三國志崔琰傳注。虬鬚直視。酉陽雜俎。太宗虬鬚。劍俠傳虬鬚叟。老杜八哀詩。虬鬚似太宗。皆作鬚不作髯。作髯者確爲唐宋後人所竄亂。以吾觀之。李靖有桑中之約。遇黃鬚翁事。自來相傳如是。其他云云。俱出元人劇本傳會。屬耳。史言楊虛道性疏。高下在心。朝臣之內。頗推高頗。敬牛弘。厚接薛道衡。視蘇威蔑如也。自餘朝貴。多被陵轍。家僮數千。後庭妓妾。曳綺羅者以千數。觀其素來驕貴。踞見英雄。自屬意中事。不知史正言李靖初見楊素。卽有拊牀推坐之目。安所謂踞見。王仲瞿詩云。唐書兩種難憑信。况且虞初九百篇。其語洵然。夫以李靖之才。唐高祖不能知而憐也。惟太宗許紹保惜之。唐初稱臣於突厥。至靖乃以輕騎三千。深入虜廷。奇恥始雪。人之言曰。兵良師衆。方克禦侮。由靖以觀。祇須一枝之軍。一將之勇。亦足以震驚世界。奚須傾國哉。靖壽七十有九。或云不幾終及。晚年修道者。皆稗乘之言。不見正傳。史稱尉遲忠武篤信仙方。飛鍊金石。則修道者敬德也。溫彥博高駉往。歸奉義之徒。專以賊忌才能誣害忠良爲職志。智出於婦人下矣。民八夏五。予得吾邑鍾際唐

孝廉所繪紅拂圖。徵題迄今。已閱十八年矣。或畢刪。或摘錄。或廿取一而十取五焉。僅獲二百七十餘家。詩數百篇。雖萬首之願難償。而書成非一朝一夕之功。讀者當能諒及。是編都四卷。首紅拂偶錄一卷。皆輯古今人所述紅拂事。溯源也。次圖詠分上下二卷。殿以拙撰紅拂詩話一卷。乃所以貫穿各篇。包舉全書。誠不辭蠹測管窺之誚。聊助餘興而已。人以錢求利。尚且失之。况欲以渺渺之軀。藐藐之才。求知於天下乎。是故天下祇有熱場結識。安有所謂風塵知己。風塵知己。偏逢女俠。談何容易。夢之也難。吾儕惟結習難忘。讀書爲佳。當求之於千載之上。千載之下。以尋其故紙堆中生活。謝絕浮光俗譽。第恨少知人之學。豈患人之不已知哉。或云李百藥字重規。隋內史令德林子。隋唐嘉話所載百藥事。訛爲藥師。王深寧已斥其謬。昔人謂隨清娛墓碑致可疑。不應以龍門令侍姬之芳名。磨滅於千百載前。待褚學士而銘幽洵有之。彼貞觀文人。宜同聲歌詠其事。何復埋沒於千百載後。至明始流傳人間。紅拂事將毋同。惟其爲憐才於風塵中。雖古今人明知其妄。而仍豔羨之丹青之歌詠之才少已。想望千秋。庶幾一遇。得毋太癡歟。陳眉公曰。憐才二字。我不喜聞。才者當憐人。寧爲人所憐。此言實獲我心。士恆憐衆人。衆人不之知。才人固無有見而憐之者。惟才者始憐才者。亦惟才者始敬才者。衆人之愛才者。祇可名之以憐而未敢敬也。是以男子憐才之名。雖美而尙未美。惟古今來女子憐才之事。差可尋味耳。予謂士固願憐衆人。不欲

憐美人才人。設遇美人才人。必禮而敬之。烏所謂憐。若夫美人遲暮。將軍老去。名士病癯。縱欲憐之。安得而憐之。當亦不蒙其憐矣。故人苟不於青年立功名。建奇策。顯父母。至於齒豁頭童。身殘才盡。力絀心長。途窮日暮。尙安所希冀。盍一讀予所編紅拂集。轉大可氣吐眉揚。而自慰以慰人。

民國二十六年丁丑四月南匯朱太忙撰文

紅拂集目錄

紅拂圖

紅拂集自序

鍾斯威
朱惟公

卷一

【紅拂偶錄】

| | |
|----------|---|
| 唐代叢書 | 一 |
| 池北偶談 | 五 |
| 茶香室叢鈔 | 五 |
| 讀書敏求記 | 六 |
| 柳南隨筆 | 六 |
| 小浮梅閒說 | 七 |
| 花朝生筆記 | 七 |
| 高青邱集 | 八 |
| 六如居士全集 | 八 |
| 明末四百家遺民詩 | 八 |
| 梅村集 | 九 |

| | |
|---------|---|
| 百美新詠 | 九 |
| 烟霞萬古樓詩集 | 九 |
| 古艷樂府 | 一 |
| 吳淞草堂詩稿 | 一 |
| 瓶水齋詩集 | 一 |
| 寒松閣詩集 | 一 |
| 吹黃子松風集 | 一 |
| 書船庸談 | 一 |
| 長真閣詩集 | 一 |
| 自然好學齋詩鈔 | 一 |
| 名姝百詠 | 一 |
| 慧福樓幸草 | 一 |
| 五百石洞天揮塵 | 一 |
| 閒情十二撫 | 一 |
| 隋唐嘉話 | 一 |

| | |
|---------|---|
| 美人譜 | 一 |
| 二黃尋聲譜 | 一 |
| 麗情集 | 一 |
| 戲瑕 | 一 |
| 楊了公先生詩集 | 一 |
| 徵題紅拂圖 | 一 |
| 自題紅拂圖 | 一 |
| 徵詩題句 | 一 |
| 續題 | 一 |
| 紅拂圖題詠集序 | 一 |
| 題詞 | 一 |
| 【紅拂圖詠上】 | 一 |
| 丁柏坪 | 一 |
| 丁兆松 | 一 |

卷二

韓道明
賈鎰等

紅拂集

目錄

| | | |
|-----|-------|---|
| 于干 | | 一 |
| 孔祥百 | | 二 |
| 孔慶徵 | | 二 |
| 毛文沂 | | 二 |
| 方德 | | 二 |
| 王滄澄 | | 二 |
| 王寅斗 | | 三 |
| 王麟書 | | 三 |
| 王啓懷 | | 三 |
| 王育慶 | | 三 |
| 王家彥 | | 四 |
| 王逸 | | 四 |
| 王乃屏 | | 四 |
| 王雷禪 | | 五 |
| 王仁溥 | | 五 |
| 王恆清 | | 五 |
| 王巖 | | 五 |

| | | |
|-----|-------|---|
| 史遠峴 | | 五 |
| 田興奎 | | 六 |
| 田攬芸 | | 六 |
| 朱翰臣 | | 六 |
| 朱家驊 | | 七 |
| 朱家駒 | | 七 |
| 朱雲樞 | | 七 |
| 朱聲韶 | | 〇 |
| 朱壽延 | | 〇 |
| 朱寶田 | | 一 |
| 何煥華 | | 一 |
| 何國瑾 | | 二 |
| 余 棗 | | 二 |
| 余靜超 | | 三 |
| 吳恭亨 | | 三 |
| 吳師善 | | 三 |
| 呂鑑秋 | | 三 |

五

| | | |
|-----|-------|----|
| 宋攀桂 | | 一四 |
| 李石鈞 | | 一四 |
| 李鏡熙 | | 一四 |
| 李慎維 | | 一五 |
| 李親仁 | | 一五 |
| 李嘉禾 | | 一五 |
| 李維藩 | | 一六 |
| 李 棟 | | 一六 |
| 李實蕃 | | 一六 |
| 杜運昌 | | 一六 |
| 杜邁遠 | | 一七 |
| 汪劍鳳 | | 一七 |
| 沈其光 | | 一七 |
| 沈欽文 | | 一八 |
| 沈昌眉 | | 一八 |
| 沈舉清 | | 一八 |
| 沈中路 | | 一八 |

| | | |
|------|-----|-----|
| 俞壽嵩 | 俞琴 | 夏躡 |
| 侯大章 | 姚永年 | 奚紹爽 |
| 金繼文 | 姚巍 | 孫同德 |
| 金大勳 | 姚行沂 | 孫誥鴻 |
| 金榜 | 姜景伯 | 孫家瑞 |
| 邵景毅 | 施民佑 | 孫玉 |
| 林維朝 | 柳襄疾 | 徐緒通 |
| 林維周 | 胡蘊 | 徐其鴻 |
| 林之美 | 胡恩綬 | 徐公修 |
| 林步蟾 | 胡天人 | 徐松 |
| 林百舉 | 胡復全 | 徐霽 |
| 松厂山人 | 胡世楨 | 徐超 |
| 宗威 | 胡介昌 | 徐應鵬 |
| 周威 | 胡善仕 | 秦景清 |
| 周龍章 | 胡祥清 | 秦錫田 |
| 周瑾 | 胡墨儒 | 秦之濟 |
| 卓堅 | 章永和 | 翁守藩 |

| | |
|-----|----|
| 荆鳳岡 | 三二 |
| 袁增 | 三二 |
| 袁昌和 | 三三 |
| 郝鑫海 | 三三 |
| 高伯瑜 | 三三 |
| 康以毅 | 三三 |
| 庾萬選 | 三四 |
| 張逢辰 | 三四 |
| 張官倬 | 三五 |
| 張揚芬 | 三五 |
| 張學義 | 三六 |
| 張社 | 三六 |
| 張錫芳 | 三六 |
| 張念祖 | 三六 |
| 張緩圖 | 三七 |
| 張文魁 | 三七 |
| 張久士 | 三八 |

紅
拂
集
目錄

| | |
|-----|----|
| 張鐘亮 | 三八 |
| 張寶樹 | 三八 |
| 張臻 | 三八 |
| 張江裁 | 三八 |
| 張錫慶 | 三九 |
| 張翼坛 | 三九 |
| 曹桐 | 三九 |
| 曹紹南 | 三九 |
| 曹嘉詔 | 四〇 |
| 曹賢 | 四〇 |
| 凌春生 | 四〇 |

卷 三

【紅拂圖詠下】

| | |
|-----|---|
| 許鵬 | 一 |
| 許詠仁 | 一 |
| 郭鐸 | 一 |

| | |
|-----|---|
| 郭福如 | 二 |
| 郭進 | 二 |
| 陳洙 | 二 |
| 陳淵 | 三 |
| 陳守治 | 三 |
| 陳祖方 | 三 |
| 陳其謙 | 三 |
| 陳敏 | 四 |
| 陳俗 | 四 |
| 陳奎 | 四 |
| 陳蔚華 | 四 |
| 陳永釗 | 四 |
| 陳祖衡 | 五 |
| 陳建熙 | 五 |
| 陸颺 | 五 |
| 陶鏞 | 五 |
| 傅維中 | 五 |

| | |
|-------|---|
| 傅謙豫 | 六 |
| 富銘鐘彭森 | 六 |
| 曾笑雲 | 六 |
| 湯允莘 | 七 |
| 湯忠鑫 | 七 |
| 甯勤德 | 七 |
| 費志中 | 七 |
| 鈕敦仁 | 七 |
| 童煦人 | 八 |
| 閔可仁 | 八 |
| 華重協 | 八 |
| 華精 | 八 |
| 馮衛蓀 | 九 |
| 黃作楷 | 九 |
| 黃文琛 | 九 |
| 黃敬 | 九 |
| 楊雪門 | 九 |

| | |
|-----|----|
| 楊星垣 | 一〇 |
| 楊健高 | 一〇 |
| 楊蔭廷 | 一〇 |
| 楊鍾衡 | 一〇 |
| 楊南春 | 一一 |
| 楊國琛 | 一一 |
| 楊肇瀛 | 一二 |
| 楊鍾實 | 一二 |
| 楊天和 | 一二 |
| 楊名賢 | 一二 |
| 楊鴻年 | 一三 |
| 業揆 | 一三 |
| 葉子宜 | 一三 |
| 葉壽祺 | 一三 |
| 葉際唐 | 一四 |
| 鄒理之 | 一四 |
| 靳淑潛 | 一四 |

| | |
|--------|----|
| 管之樞 | 一四 |
| 翟法乾 | 一五 |
| 趙潤 | 一五 |
| 劉熙照 | 一五 |
| 劉宏 | 一六 |
| 劉仲澤 | 一六 |
| 劉毅蓀 | 一六 |
| 劉家芹 | 一七 |
| 潘文安 | 一七 |
| 練雲樵 | 一七 |
| 蔡守談溶溶 | 一七 |
| 蔡亮成 | 一七 |
| 蔡振南蔡杏芳 | 一八 |
| 蔣兆燮 | 一八 |
| 蔣學潛 | 一九 |
| 鄭馨光 | 一九 |
| 鄭益廣 | 一九 |

| | | |
|-----|-------|----|
| 鄭永詒 | | 一九 |
| 鄭翼堂 | | 二〇 |
| 錢學坤 | | 二〇 |
| 錢嘉穀 | | 二〇 |
| 錢霖 | | 二〇 |
| 錢鍾瑜 | | 二一 |
| 錢裕麟 | | 二一 |
| 鮑祖德 | | 二一 |
| 鮑澤穆 | | 二一 |
| 龍廣言 | | 二一 |
| 魯晉藩 | | 二二 |
| 盧璧 | | 二二 |
| 諸懿德 | | 二二 |
| 韓應辰 | | 二三 |
| 羅煥藻 | | 二三 |
| 關和甫 | | 二三 |
| 嚴昌培 | | 二三 |

| | | |
|-----|-------|----|
| 嚴惟式 | | 二三 |
| 嚴潛 | | 二四 |
| 蘇育南 | | 二四 |
| 顧澣 | | 二四 |
| 顧德鈺 | | 二五 |
| 顧玉麒 | | 二五 |
| 執 厂 | | 二五 |
| 詞 | | |
| 方壽昌 | | 二五 |
| 王治 | | 二六 |
| 王鼎銘 | | 二六 |
| 王育馨 | | 二六 |
| 朱家驊 | | 二六 |
| 吳聽猿 | | 二七 |
| 吳承烜 | | 二七 |
| 吳清麗 | | 二八 |
| 宋攀桂 | | 二八 |

| | | |
|-----|-------|----|
| 李嘉禾 | | 二八 |
| 周龍章 | | 二八 |
| 俞尚志 | | 二九 |
| 姚洪淦 | | 二九 |
| 孫同德 | | 二九 |
| 徐守清 | | 三〇 |
| 袁潛 | | 三〇 |
| 張榮培 | | 三〇 |
| 張揚芬 | | 三〇 |
| 陸寶樹 | | 三一 |
| 湯英 | | 三一 |
| 項實 | | 三一 |
| 楊遵路 | | 三一 |
| 楊肇瀛 | | 三一 |
| 鄒錫祜 | | 三一 |
| 熊發元 | | 三一 |
| 劉思鞠 | | 三一 |

紅拂集

目錄

| | |
|-----|----|
| 劉心如 | 三三 |
| 劉敬 | 三三 |
| 潘逸園 | 三三 |
| 蔡璧 | 三四 |
| 閻震中 | 三四 |
| 諸懿德 | 三五 |
| 韓道明 | 三五 |
| 曠世斌 | 三六 |
| 龐仕 | 三六 |
| 顧澂 | 三六 |
| 閻秀 | |
| 王韞秀 | 二六 |
| 朱芳渠 | 二七 |
| 周儀英 | 二七 |
| 金令儀 | 二七 |
| 姚澹 | 二七 |
| 孫妙真 | 二七 |

| | |
|-----|----|
| 張寶媛 | 三八 |
| 麥寶英 | 三八 |
| 錢美楮 | 三八 |
| 龐秀娟 | 三八 |

卷四

| | | |
|------|------|----|
| 紅拂詩話 | 朱惟公 | 一 |
| 太忙啓事 | | 二〇 |
| 紅拂續話 | 太忙補撰 | 二一 |

紅拂集卷一

南匯朱惟公纂輯

紅拂偶錄

唐代叢書

清山陰陳蓮塘

蚪髯客傳

唐洛陽張說道濟

隋煬帝之幸江都。命司空楊素守西京。素驕貴。又以時亂。天下之權重望崇者。莫我若也。奢貴自奉。禮異人臣。每公卿入言。賓客上謁。未嘗不踞牀而見。令美人捧出。侍婢羅列。頗僭於上。末年愈甚。無復知所負荷。有扶危持顛之心。一日。衛公李靖。以布衣上謁。獻奇策。素亦踞見。公前揖曰。天下方亂。英雄競起。公爲帝室重臣。須以收羅豪傑爲心。不宜踞見賓客。素斂容而起。謝公與語。大悅。收其策而退。當公之聘。辦也。一妓有殊色。執紅拂立於前。獨目公。公旣去。而執拂者臨軒指吏曰。問去者處士第幾。住何處。公具以對。妓誦而去。公歸逆旅。其夜五更初。忽聞叩門而聲低者。公起問焉。乃紫衣帶帽人。杖一囊。公問誰。曰。妾楊家之紅拂妓也。公遽延入。脫衣去帽。乃十八九佳麗人也。素面晝衣而拜。公驚答拜曰。妾侍楊司空久。閱天下之人多矣。無如公者。絲蘿非獨生。願托喬木。故來奔耳。公曰。楊司空權重京師。如何。曰。彼屍居餘氣。

不足畏也。諸妓知其無成。去者甚衆矣。彼亦不甚逐也。計之詳矣。幸無疑焉。問其姓。曰。張。問其伯仲之次。曰。最長。觀其肌膚儀狀。言辭氣語。真天人也。公不自意獲之。愈喜愈懼。瞬息萬慮不安。而窺戶者無停履。數日亦聞追討之聲。意亦非峻。乃雄服乘馬。排闥而去。將歸太原。行次靈石旅舍。既設牀。爐中煮肉且熟。張氏以髮長委地。立梳牀前。公方刷馬。忽有一人。中形赤髯如虬。乘蹇驢而來。投革囊於爐前。取枕欹臥。看張梳頭。公怒甚未決。猶親刷馬。張熟視其面。一手映身。搖示公。令勿怒。急急梳頭畢。斂衽前問其姓。臥客答曰。姓張。對曰。妾亦姓張。合是妹。遽拜之。問第幾。曰。第三。因問妹第幾。曰。最長。遂喜曰。今夕幸逢一妹。張氏遙呼李郎。郎且來見三兄。公驟拜之。遂環坐曰。煮者何肉。曰。羊肉。計已熟矣。客曰。饑。公出市胡餅。客抽腰間七首。切肉共食。食竟餘肉。亂切送驢前食之甚速。客曰。觀李郎之行。貧士也。何以致斯異人。曰。靖雖貧。亦有心者焉。他人見問故不言。兄之間則不隱耳。具言其由。曰。然則將何之。曰。將避地太原。曰。然。故非君所致也。曰。有酒乎。曰。主人西則酒肆也。公取酒一斗。酒既巡。客曰。吾有少下酒物。李郎能同之乎。曰。不敢。於是開革囊。取一人頭并心肝。却頭囊中。以七首切心肝共食之。曰。此人天下負心者。銜之十年。今始獲之。吾憾釋矣。又曰。觀李郎儀形器宇。真丈夫也。亦聞太原有異人乎。曰。嘗識一人。愚謂之真人也。其餘將帥而已。曰。何姓。曰。靖之同姓。曰。年幾。曰。僅二十。曰。今何爲。曰。州將之子。曰。似矣。亦須見之。李郎能致